



सपादक
प्रकाश पडित

प्रथम संस्करण
फरवरी, १९५८

मूल्य
ढेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ध
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफरिन पुल, दिल्ली



जीवनी	...	५—२०
चयन	...	२१—६५

नदमें—

१. मुझने पहली सी मोहव्वत...	...	२१
२. खुदा वो वक्त न लाए	२३
३. मेरी जा अब भी अपना हुस्न...	..	२५
४. सोच	...	२७
५. रकीव मे	...	२८
६. कुत्ते	...	३०
७. तनहाई	...	३१
८. चन्द रोज़ श्रीर मेरी जान ।	...	३२
९. बोल...	...	३४
१०. धान्दरी छत	...	३५
११. ऐ दिने-वेताव ठहर ।	...	३६
१२. मौजूए-सुगन	...	३७
१३. धाज की रात	...	३८
१४. साहराह	...	४०
१५. मेरे हमदन मेरे दोस्त	...	४१



(II)

सपाद प्रकाश	१६ लीहो-कलम	...	४३
	१७. तुम्हारे ह्रस्व के नाम	...	४४
	१८ दो इक्षक	..	४५
	१९ निसार में तेरी गलियों पे	..	४८
	२० याद	.	५०
	२१ दर्द आएगा दवे पाँव	.	५१
प्रथम फर्वर	२२ कोई आशिक किसी महबूबा से	..	५३
	२३ शीशों का मसीहा कोई नहीं !	..	५४
	२४ अजाम	...	५८
	२५ हसीना-ए-खयाल से	...	५९
	२६ इन्तजार	...	६०
मूल्य ढेठ १	२७ ह्रस्व और मौत	...	६१
	२८ मेरे नदीम	.	६२
	२९ मर्गें-सोज़े-मोहब्बत	...	६३
	३० तराना	.	६४
प्रकाश राज्य कदर्म	३१ शबलें	...	६५
	३२ कुछ चुने हुए शेर	...	८९

मुद्रक
युगा
उर्फा

१

४१

४२

४३

४८

४०

४१

४३

४४

४८

४९

६०

६१

६२

६३

६४

६५

८९

मताञ्च-ए-लौहो-कलम छिन गई तो क्या गुम है ?
कि खूने-दिल में डबो ली है उंगलियां भेने ॥



पाकिस्तान टाइम्स, लाहौर

११-१०-५७

वरादरम प्रकाश पण्डित,

तस्लीम ।

आपके दो खत मिले । भई, मुझे अपने हालाते-जिन्दगी में कतई दिलचस्पी नहीं है, न मैं चाहता हूँ कि आप उन पर अपने पढ़ने वालों का वक्त जाया करें । उन्तिखाव (कविताओं के चयन) और उसकी इंग्रज़ी (प्रकाशन) की आपको इजाजत है । अपने बारे में मुहत्तर मालूमात लिखे देता हूँ । पैदाइज सियालकोट १९११ । तालीम रज़ाच मिशन हाई स्कूल सियालकोट, गवर्नमेंट कालेज लाहौर (एम० ए० अंग्रेज़ी १९३३, एम० ए० अरबी १९३४) । मुलाजमत एम० ए० ओ० कालेज अमृतसर १९३४ से १९४० तक । हेन्री कालेज लाहौर १९४० से १९४२ तक । फ़ौज में (कनल की हैसियत से) १९४२ से १९४७ तक । उनके बाद 'पाकिस्तान टाइम्स' और 'उमरोज़' की एडिटरी ताहाल (अब तक) । मार्च १९५१ से अप्रैल १९५५ तक जेलगाना (रावलपिंडी कान्सपिरेसी केस के

सिलसिले में) । किताबें 'नक्शे-फर्यादी,' 'दस्ते-सबा' और 'जिन्दा-नामा' ।

आपका
'फैज'



'फैज' के इस पत्र के बाद फैज के व्यक्तिगत जीवन के बारे में कुछ लिखना, लिखना न होकर गढ़ना होगा—जिसे जाहिर है न मैं पसंद करता हूँ, न 'फैज,' और न ही आप पसंद करेंगे । अतएव 'फैज' के जीवन की वजाय मैं सीधे 'फैज' की शायरी की ओर आता हूँ जिसके पीछे वर्षों बल्कि सदियों की साहित्यिक पूंजी है, बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि स्वयं साहित्य और समाज दोनों मिलकर वर्षों तपस्या करते हैं, तब जाकर ऐसी मन्त्र-मुग्ध कर देने वाली शायरी जन्म लेती है ।

"शेर लिखना जुर्म न सही लेकिन बेवजह शेर लिखते रहना ऐसी अक्लमन्दी भी नहीं है ।" 'फैज' के पहले कविता-संग्रह 'नक्शे-फर्यादी' की भूमिका में इस वाक्य को पढ़ते हुए मुझे 'गालिव' का वह वाक्य याद आ गया जिसमें उर्दू के सबसे बड़े शायर ने कहा था कि जब से मेरे सीने (छाती) का नासूर बढ़ हो गया है, मैंने शेर कहना छोड़ दिया है ।

सीने का नासूर चाहे इश्क या प्रेम की भावना हो, चाहे स्वतन्त्रता, देश एव मानव-प्रेम की भावना, कविता ही के लिए नहीं समस्त ललित कलाओं के लिये अनिवार्य है । अध्ययन और अभ्यास से हमें बात कहने का सलीका तो आ सकता है लेकिन

अपनी बात को वजनी बनाने और दूसरे के मन में विठाने के लिए स्वयं हमें अपने मन में उतरना पड़ता है। विश्व-साहित्य में ऐसी बहुत-सी मिसालें मिलती हैं कि किन्हीं कवि अथवा लेखकों ने बहुत अच्छी कविताएँ, एक बहुत अच्छा उपन्यास या दस-पन्द्रह बहुत अच्छी कहानियाँ लिखने के बाद लिखने से हाथ खींच लिया और फिर समालोचकों या पाठकों के तकाजों से जब उसने पुनः कलम उठाया तो वह बात पैदा नहीं हो सकी जो उसके 'कच्चेपन' के जमाने में हुई थी। कदाचित् इसी बात को लेकर 'नक़्शे-फर्यादी' की भूमिका में 'फैज' ने अपनी दो-चार नज़्मों को क़ाविले-बदाश्त करार देते हुए लिखा था कि "आज से कुछ वरस पहले एक मुऐयन जज्वे (निश्चित भावना) के ज़ेर-असर अशआर (शेर) खुद-बखुद वारिद (आगत) होते थे, लेकिन अब मज़ामीन (विषय) के लिए तजस्सुस (तलाश) करना पड़ता है... हम में से वेगतर की शायरी किसी दाखली या ख़ारिजी मुहर्रक (अंतरंग या बाह्य प्रेरक) की दस्ते-निगर (आभारी) होती है और अगर उन मुहर्रिकात की शिहत (उम्रता) में कमी आ जाये या उनके इज़हार (अभिव्यक्ति) के लिये कोई सहूल रास्ता पेशे-नजर न हो तो या तो तज़ुर्वीत को मस्त्र (रूपांतरित) करना पड़ता है या तरीके-इज़हार को। ऐसी मूरते-हालात पैदा होने से पहले ही ज़ौक और मसालहत का तकाजा यही है कि गायर को जो कुछ कहना हो कह ले, अहले-महफिल का मुक्रिया अदा करे और इजाज़त चाहे।"

‘फैज़’ के अतरंग या बाह्य प्रेरको में सब से बड़ा प्रेरक ‘हुस्नो-इश्क’ है बल्कि उसने तो यहाँ तक कह दिया था कि -

...

लेकिन उस शोख के आहिस्ता से खुलते हुए होट
हाए उस जिस्म के कम्बख्त दिलावेज़ खुतूत^१
आप ही कहिये कही ऐसे भी अफसूँ^२ होंगे
अपना मौजूए-सुखन^३ इन के सिवा और नहीं
तवए-शायर का^४ वतन इन के सिवा और नहीं

(मौजूए-सुखन)

किन्तु इस वद के शुरू के ‘लेकिन’ से पहले उसने जिन चीजों को अपना मौजूए-सुखन बनाना पसंद नहीं किया था और :

इन दमकते हुए शहरो की फरावा मखलूक^५ ,
क्यों फकत मरने की हसरत में जिया करती है ?
ये हसी खेत फटा पडता है जोवन जिन का,
किस लिए इन में फकत भूख उगा करती है ?

ऐसे प्रश्न हल किये बिना छोड़ दिये थे, वही ‘साधारण’ प्रश्न वाद में उसकी अतरंग और बाह्य प्रेरणाओं का साधन बने और यही वे प्रश्न थे जिन्होंने उसे अहले-महफिल का शुक्रिया अदा करके उठ आने से रोका और उर्दू साहित्य को एक बड़ा शायर प्रदान किया ।

फैज़ अहमद ‘फैज़’ आधुनिक काल के उन चंद बड़े शायरों

१ हृदयाकर्षक रेखाये (वनावट) २ जादू ३. काव्य-विषय

४. शायर की प्रकृति ५ विशाल जनता

में से हैं जिन्होंने काव्य-कला में नये प्रयोग तो किये लेकिन उन की बुनियाद पुराने प्रयोगों पर रखी और इस आधार-भूत तथ्य को कभी नहीं भुलाया कि हर नई चीज़ पुरानी कोख से जन्म लेती है। यही कारण है कि उसकी शायरी का अध्ययन करते समय हमें किसी प्रकार की अजनवियत महसूस नहीं होती। पेचीदा और अस्पष्ट उपमाओं से वह हमें उलझन में नहीं डालता बल्कि अपने कोमल स्वर में वह हम से सरगो-शियां करता है और उसकी सरगोशी इतनी अर्थपूर्ण होती है कि कुछ शब्द कान में पड़ते ही मनोभाव उभर आते हैं। ज़रा 'नक्शे-फर्यादी' का पहला पन्ना उलटिये:—

रात यूँ दिल में तेरी खोई हुई याद आई,
जैसे वीराने में चुपके से बहार आजाये,
जैसे सहाराओं में^१ हौले से चले वादे-नसीम^२,
जैसे वीमार को देवजह करार आजाये।

प्रेयसी की याद कोई नया काव्य-विषय नहीं है लेकिन इन सुन्दर उपमाओं और अपनी विशेष वर्णन-शैली से उसने इसे बिल्कुल नया बल्कि अद्भुत बना दिया है। इस एक कित्आ हो की नहीं यह उसकी समूची शायरी की विशेषता है कि वह नयी भी है और पुरानी भी। वर्तमान को उपज है लेकिन अतीत की उत्तराधिकारी है। नये विषय पुरानी शैली में और पुराने विषय नये ढंग से प्रस्तुत करने का जो कोमल 'फ़ंज' को प्राप्त है, आधुनिक काल के बहुत कम शायर उसकी गर्द

को पहुँचते हैं । ज़रा 'गालिव' का यह शेर देखिये

दिया है दिल अगर उसको बशर है क्या कहिये ।

हुआ रकीब तो हो, नामाबर^१ है क्या कहिये ॥

और अब इसी विषय को 'फैज' की नज़म 'रकीब से' के दो शेरों में देखिये —

तूने देखी है वो पेशानी^२, वो रुख़सार^३, वो होट,

ज़िन्दगी जिनके तसव्वुर मे^४ लुटा दी हमने ।

हमने इस इश्क में क्या खोया है क्या पाया है,

जुज तेरे^५ और को समझाऊ तो समझा न सकूँ ।

महबूब, आशिक, रकीब और इश्क के मुआमलो तक ही सीमित नहीं, 'फैज' ने हर जगह नई और पुरानी बातों और नई और पुरानी शैली का बड़ा सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है । 'गालिव' का एक और शेर है

लिखते रहे जुनू की^६ हिकायाते-खूँचका^७ ।

हरचद इसमें हाथ हमारे कलम हुए^८ ॥

और 'फैज' का शेर है

हम परवरिशे - लौहो - कलम^९ करते रहेगे ।

जो दिल पे गुज़रती है रकम करते रहेगे^{१०} ॥

इन उदाहरणों से मेरा उद्देश्य 'फैज' और गालिव की शायरी के समन्वित मूल्य दर्शाना नहीं है और मेरा अभिप्राय यह भी

१ पद्म-वाहक २ माया ३ कपोल ४ कल्पना में ५ तेरे सिवाय ६ इश्क अथवा उन्माद की ७ रक्तिम क्या ८ कट गये ९ तलवार और कलम का पालन १० लिखते रहेगे

नहीं है कि हमें अतीत की समस्त परम्पराओं को ज्यों का त्यों अपना लेना चाहिये। कुछ परम्पराएँ, चाहे वे साहित्य की हों, संस्कृति की हों, या अन्य सामाजिक खडों की, अपनी ऐतिहासिक कार्यपूति के बाद अपनी मीत आप मर जाती हैं। उन्हें नये सिरे से जिलाने का मतलब गड़े मुर्दे उखाड़ना और ऐतिहासिक विकास से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना है। लेकिन इससे भी खतरनाक बात यह है कि नयेपन के उन्माद में पुरानी चीजों को केवल इसलिये घृणा के योग्य मान लिया जाये कि वे पुरानी हैं। धरती, आकाश, चाँद, सितारे, सूरज, समुद्र और पहाड़ सब पुराने हैं लेकिन हमें ये चीजें पसंद हैं; और इसलिये पसंद है कि हम प्रतिक्षण उन्हें बदलते रहते हैं—यानी इनके सम्बन्ध में हमारा दृष्टिकोण बदलता रहता है। हम इनके बारे में नई बातें मालूम कर लेते हैं और इस तरह ये समस्त पुरानी चीजें सदैव नई बनी रहती हैं।

यह एक बड़ी विचित्र लेकिन प्रशसनीय वास्तविकता है कि प्राचीन और नवीन शायरों की महफिल में खप कर नी 'फैज' की अपनी एक अलग हैसियत है। उसने काव्य-कला के नियमों में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं किया, और न कभी अपनी अद्वितीयता प्रकट करने के लिये 'मीरा जी' (उर्दू के एक प्रयोगवादी शायर) की तरह यह कहा है कि "अकसर-रियत (बहुजनो) की नजमें अलग हैं और मेरी नजमें अलग; और चूँकि दुनिया की हर बात हर शब्द के लिये नहीं होनी इसलिये मेरी नजमें भी सिर्फ उनके लिये हैं जो उन्हें समझने

के अहल हो ।” (यह अद्वितीयता शायर की है, शायरी की नहीं) फिर भी उसके किसी शेर पर उसका नाम पढे बिना हम बता सकते हैं कि यह ‘फैज’ का शेर है । ‘फैज’ की शायरी की ‘अद्वितीयता’ आधारित है उसकी शैली के लोच और मदगति पर, कोमल, मृदुल और सौ-सौ जादू जगाने वाले शब्दों के चयन पर, तरसी हुई नाकाम निगाहें और आवाज में सोई हुई गीरीनियाँ ऐसी अलकृत परिभाषाओं और रूपकों पर, और इन समस्त विशेषताओं के साथ गूढ से गूढ बात कहने के सलीके पर । उर्दू के एक बुजुर्ग शायर ‘असर’ लखनवी ने शायद बिल्कुल ठीक लिखा है कि “ ‘फैज’ की शायरी तरक्की के मदारिज (दर्जे) तै करके अब इस नुक्ता-ए-उरूज (शिखर बिन्दु) पर पहुँच गई है जिस तक शायद ही किसी दूसरे तरक्की-पसद (प्रगतिशील) शायर की रसाई हुई हो । तख्तियूल (कल्पना) ने सनाअत (शिल्पकला) के जौहर दिखाये हैं और मासूम जज्वात को हसीन पैकर (शरीर) वल्शा है । ऐसा मालूम होता है कि परियों का एक गौल (भुण्ड) एक तलिस्मी फिजा (जादूई वातावरण) में इस तरह मस्ते-परवाज (उडने में मस्त) है कि एक पर एक की छूत पड़ रही है और कौसे-कजह (इन्द्रधनुष) के अक्कास (प्रतिरूपक) बादलों से सवरगी वारिश हो रही है ।”

अपनी शायरी की तरह अपने व्यक्तिगत जीवन में भी उसे किसी ने ऊँचा बोलते नहीं सुना । बातचीत के अतिरिक्त मुशायरो में भी वह इस तरह अपने शेर पढता है जैसे उसके

हॉटो से यदि एक जरा ऊँची आवाज़ निकल गई तो न जाने कितने मोती चकनाचूर हो जायेंगे। वह सेना में कर्नल रहा, जहाँ किमी नर्मदिल व्यक्ति की गुंजाइश नहीं होती। उसने कालेज की प्रोफेसरी की, जहाँ कालेज के लड़के प्रोफेसर तो प्रोफेसर शैतान तक को अपना स्वभाव बदलने पर विवश कर दे। उसने रेडियो में नौकरी की, जहाँ अपने मातहतों को न डाटने की दलील अफसर की नालायकी समझी जाती है। उसने पत्रकारिता-जैसा जान-जोखम का पेशा भी अपनाया और फिर जब पाकिस्तान सरकार ने इस देवता-स्वरूप व्यक्ति पर हिंसात्मक विद्रोह का आरोप लगाकर जेल में डाल दिया तब भी मेजर मोहम्मद इसहाक (फैज के जेल के साथी) के कथनानुसार "कहीं पास-पड़ोस में तू-तू मैं-मैं हो, दोस्तों में तल्ल-कलामी हो, या यूँ ही किसी ने त्योरी चढा रखी हो, 'फैज' की तवीयत जहर खराब हो जाती थी और इसके साथ ही घायरी की कैफियत (मूड) भी काफूर हो जाती थी।" 'फैज' ने अपने निर्दोष होने का तथा उच्चाधिकारियों के पद्यों का जिक्र किया भी तो उस भाषा में :

फिक्रे - दिलदारिये - गुलजार^१ कह या न कह ?

ज़िक्रे - मुर्गाने - गिरफ्तार^२ कह या न कह ?

क्रिस्ता - ए - साज़िने-अग्दियार^३ कहूँ या न कहूँ ?

शिकवा - ए - चारे-तरहदार^४ कहूँ या न कहूँ ?

१. वाटिका-रूपी देज की दिनदारी की चित्ता २. उँदी पहिन्दो की चर्पा ३. गदुम्रो के पदुमन की क्हामी ४. रगाने चार की गिवाकन

जाने क्या वज़्र^१ है श्रव रस्मे-वफा^२ की ऐ दिल ।
वज़्र-ए-देरोना पे^३ इसरार^४ करू या न करू ?

‘फैज़’ के स्वर की यह नमी और गभीरता उसके प्राचीन साहित्य के विस्तृत अध्ययन और मौलिक रूप से रोमांटिक या स्वच्छन्दता-वादी शायर होने की देन है । लेकिन उसकी स्वच्छन्दता चू कि भौतिक ससार की स्वच्छन्दता है (प्रारभ की कुछ नज़मों को छोड़कर) और शायर का कर्तव्य उसके मतानुसार यह है कि वह जीवन से अनुभव प्राप्त करे और उस पर अपनी छाप लगाकर उसे फिर से जीवन को लौटा दे, इसलिए उसने बहुत शीघ्र सुख होटो पर तबस्सुम की ज़िया^५, मरमरी हाथों की लज़िशो, मखमली बाहों और दमकते हुए रुख़ारो^६ के सुनहले पर्दों के उस पार वास्तविकता की झलक देख ली^७ । आरजूओं के मकतल^८, भूख उगाने वाले खेत, खाक में लिथडे और खून में नहाये हुए जिस्म, बाज़ारों में विकता हुआ मज़दूर का गोश्त और नातवानो^९ के निवालों पर झपटते हुए उक्काव^६ देख लिये और कहने को तो उसने अपनी प्रेयसी से कहा लेकिन वास्तव में वह अपनी स्वच्छन्दता-

१ तरीका २ प्रेम निभाने की परिपाटी ३ पुराने ढग पर
४ आग्रह ५ मुस्कान की ज्योति ६ कपोलों के ७ वध-स्थल
८ दुबलो ९ बाज़-पक्षी

* मेरे विचार में इसका एक कारण यह भी है कि प्रेम ने ‘फैज़’ के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया है और उसे अपने आप ही में नहीं उल्लाए रखा—सम्पादक

वादी शायरी से सम्बोधित हुआ :

अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे,
 और भी दुख हैं जमाने मे मोहव्वत के सिवा,
 राहते और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,

मुझसे पहली सी मोहव्वत मेरी महव्व न मांग !

और फिर स्वच्छन्दता से पूर्णतया मुक्त उसने राजनैतिक नज्मे भी लिखी और देश-प्रेम को ठीक उसी वेदना और व्यथा के साथ व्यक्त किया जैसा कि प्रेयसी के प्रेम को किया था ।

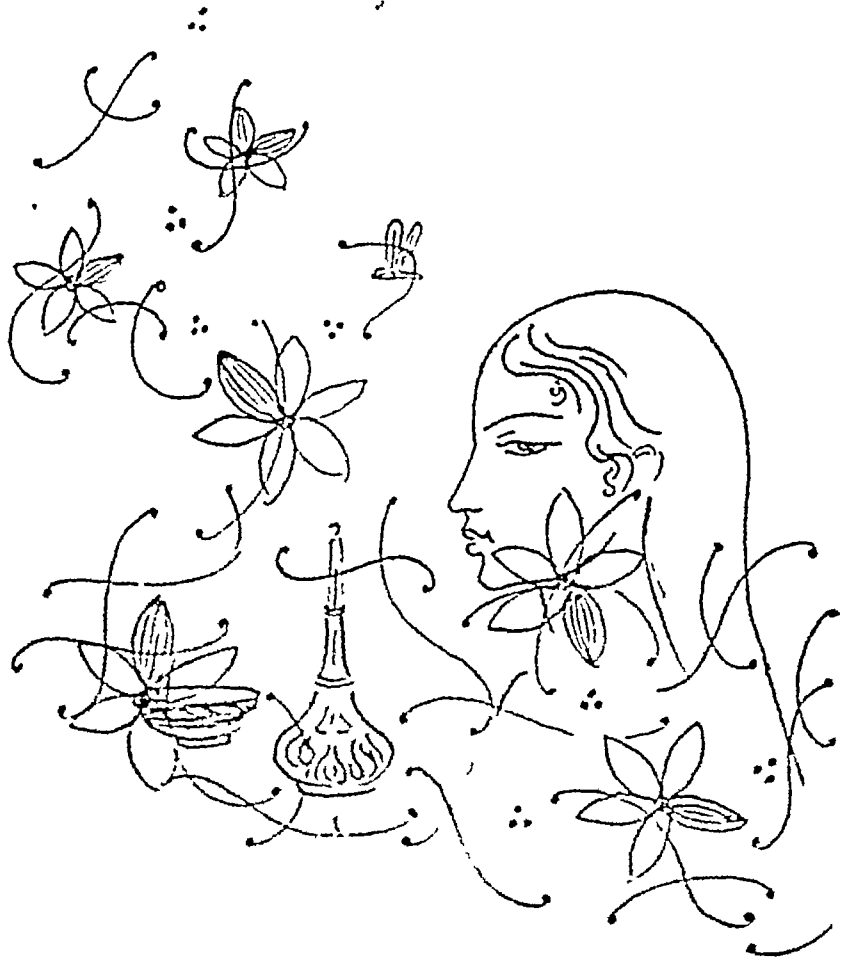
मुस्ताज हुसैन (उर्दू के एक आलोचक) के कथनानुसार उसकी शायरी में अगर एक परम्परा कँस (मजनुँ) की है तो दूसरी मन्सूर^१ की । 'फैज' ने इन दोनों परम्पराओं को अपनी शायरी में कुछ इस प्रकार समो लिया है कि उसकी शायरी स्वयं एक परम्परा बन गई है । वह जब भी महफिल में आया तो एक छोटी सी पुस्तक, एक कितआ, गजल के कुछ शेर, कुछ यूँही सा काव्य-अभिभास और कुछ क्षमा-याचना को वाते लेकर आया, लेकिन जत्र भी और जैसे भी आया खूब आया । दोस्त दुश्मनो ने सिर हिलाया, चर्चा हुई । कुछ लोगों ने यह कहकर पुस्तक पटक दी—इसमें रखा ही क्या है, लेकिन

१. एक प्रसिद्ध ईरानी बली जिनका विद्वान्म चा कि आत्मा और परमात्मा एक ही है और उन्होंने 'अनल-रुक' (नोज्ह—मैं ही परमात्मा हूँ) की धारणा उठाई थी । उस समय के मुगलमानों को उनका यह नारा अधार्मिक लगा और उन्होंने उन्हें फाँसी दे दी ।

फिर वही उस पुस्तक के शीरो को गुनगुनाने भी लगे^१ । कैसी आश्चर्यजनक वास्तविकता है कि केवल चद नज़्मो और चद गज़लो का शायर होने पर भी 'फैज' की शायरी एक बाका-यदा 'स्कूल आफ थॉट' का दर्जा रखती है और नई पीढी का कोई उर्दू शायर अपनी छाती पर हाथ रखकर इस बात का दावा नहीं कर सकता कि वह किसी-न-किसी रूप में 'फैज' से प्रभावित नहीं हुआ । रूप और रम, प्रेम और राजनीति, कला और विचार का जैसा सराहनीय समन्वय फैज अहमद 'फैज' ने प्रस्तुत किया है और प्राचीन परम्पराओं पर नवीन परम्पराओं का महल उसारा है, नि सदेह वह उसी का हिस्सा है और आधुनिक उर्दू शायरी उसके इस योग पर जितना गर्व कर सके कम है ।

१ १९५२ में जब 'फैज' जेल में था और उसकी दूसरी पुस्तक 'दस्ते-सवा' प्रकाशित हुई थी तो सय्यद सज्जाद ज़हीर (उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार, कम्युनिस्ट नेता और 'फैज' के जेल के साथी) ने तो यहाँ तक कह दिया था कि 'बहुत अर्सा गुज़र जाने के बाद जब लोग रावल-पिंडी साज़िश के मुकद्दमे को भूल जायेंगे और पाकिस्तान का मुवर्ख (इतिहासकार) १९५२ के अहम वाकयात पर नज़र डालेगा तो शालिवन इस माल का सबसे अहम तारीखी वाकया (ऐतिहासिक घटना) नज़्मो की इन छोटी-सी किताब की इशाअत (प्रकाशन) को ही करार दिया जाएगा ।

चयन



यह चयन 'फैज़' की तीन पुस्तकों 'नक्शे-फर्यादी',
'वस्ते-सवा' और 'ज़िन्दा-नामा'
में से किया गया है ।

मुझ से पहली सी मोहव्वत मेरी महव्व न मांग !

मुझ से पहली सी मोहव्वत मेरी महव्व न माग !

मैंने समझा था कि तू है तो दरदशा^१ है हयात^२ ,
तेरा गम है तो गमे-दहर का^३ भगडा क्या है ?
तेरी सूरत से है आलम मे^४ बहारो को सवात^५ ,
तेरी आंखो के सिवा दुनिया मे रक्खा क्या है ?

तू जो मिल जाये तो तकदीर निगूँ हो जाये^६ ,
यूँ न था, मैंने फकत^७ चाहा था यूँ हो जाये ।

और भी दुख हैं जमाने में मोहव्वत के सिवा,
राहतें^८ और भी हैं वस्ल की^९ राहत के सिवा,
अनगिनत सदियों के तारीक वहीमाना तलिस्म^{१०} ,
रेशमो-अतलसो-कमख्वाव के बुनवाये हुए,
जा-व-जा विकते हुए कूचा-ओ-बाजार मे जिस्म,
खाक में लिघडे हुए, खून मे नहलाये हुए ।

१. प्रकाशमान २. जीवन ३. नामास्मिन् चिताओ का ४. मंगार
में ५. स्थायित्व ६. मिर झुना ले ७. केवत ८. आनन्द ९. मिलन
की १०. अपकारपूर्ण पागविक जादू

जिस्म निकले हुए अमराज के तन्तूरो से,
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरो से ।

लौट जाती है उधर को भी नजर क्या कीजे ?

अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे ?

और भी दुख हैं ज़माने मे मोहब्बत के सिवा,

राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,

मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न माग !

खुदा वो वक्त न लाये.....

खुदा वो वक्त न लाये कि सोगवार^१ हो तू !

सुकु^२ की^३ नीद तुझे भी हराम हो जाये,
तेरी मसरतें-पैहम^३ तमाम हो जाये,
तेरी हयात^४ तुझे तल्ल-जाम^५ हो जाये,
गमो से आईना-ए-दिल^६ गुदाज^७ हो तेरा !

हुजूमे-यास से^८ वेताव होके रह जाये,
बुफूरे-दर्द से^९ सीमाव^{१०} होके रह जाये,
तेरा शबाव^{११} फ़कत^{१२} ह्वाव होके रह जाये,
गरूरे-हुस्न^{१३} सरापा नियाज^{१४} हो तेरा !

तवील^{१५} रातो में तू भी करार को^{१६} तरसे,
तेरी निगाह किसी गम-गुमार को^{१७} तरसे,
खिजां-रसीदा तमन्ना^{१८} बहार को तरसे,
कोई जवी^{१९} न तेरे संगे-आस्ता पे^{२०} भुके !

१ उदाग, मलिन-मन २. दान्ति की ३. स्थायी प्रमत्तता ४ जीवन
५ कटवा प्याना ६ हृदय-रूपी दर्पण ७. पिपलने वाला ८. निरा-
शाओ की बहूनता से ९ पीटाओ की बहूनता ने १०. पारा
११. दीवन १२. केवल १३. गीन्दर्षण का घमट १४. मिर ने पर
तक विनय की मूर्ति १५. लम्बी १६ चैन को १७ नानुभूति
करने जाने को १८. मुर्कॉरि हूई (विफन) कामना १९ माया
२०. इन्दी के पत्तर पर

जिस्म निकले हुए अमराज के तन्नूरो से,
पीप वहती हुई गलते हुए नासूरो से।

लौट जाती है उधर को भी नज़र क्या कीजे ?

अब भी दिलकश है तेरा हुस्न मगर क्या कीजे ?

और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा,

राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा,

मुझ से पहली सी मोहब्बत मेरी महबूब न माग !

खुदा वो वक़्त न लाये.....

खुदा वो वक़्त न लाये कि सोगवार^१ हो तू !

सुक़^२ की^३ नीद तुझे भी हराम हो जाये,
तेरी मसरतें-पैहम^३ तमाम हो जाये,
तेरी हयात^४ तुझे तल्ल-जाम^५ हो जाये,
ग़मो से आईना-ए-दिल^६ गुदाज^७ हो तेरा !

हुज़ूम-यास से^८ बेताब होके रह जाये,
बुफूरे-ददं से^९ सीमाब^{१०} होके रह जाये,
तेरा शवाब^{११} फकत^{१२} ख़ाब होके रह जाये,
गहरे-हुस्न^{१३} सरापा नियाज^{१४} हो तेरा !

तवील^{१५} रातों में तू भी करार को^{१६} तरसे,
तेरी निगाह किसी ग़म-गुमार को^{१७} तरसे,
खिजां-रसीदा तमन्ना^{१८} बहार को तरसे,
कोई जवी^{१९} न तेरे संगे-श्रास्ता पे^{२०} भुके !

१. उदास, मनिन-मन २. दान्ति की ३. स्वायी प्रमत्तता ४. जीवन
५. गढ़वा प्याला ६. हृदय-रूपी दर्पण ७. पिघलने वाला ८. निरा-
शाओ की बहुलता ने ९. पीशाओ की बहुलता ने १०. पारा
११. यौवन १२. केवल १३. मोन्दर्य का घमंड १४. मिर में पर
तक विनय की भूति १५. लम्बी १६. र्जन को १७. गहनानुभूति
करने वाले को १८. मुक़ाई हुई (विफात) यामना १९. माया
२०. दहलीज के पत्थर पर

कि जिन्से-अज्जो-अकीदत से^१ तुम्हको शाद^२ करे ,
 फरेवे-वादा-ए-फर्दा पे^३ एतमाद^४ करे,

खुदा वो वक्त न लाये कि तुम्ह को याद आये !

वो दिल कि तेरे लिये बेकरार अब भी है ।

वो आख जिसको तेरा इन्तजार अब भी है ॥

१ विनय और श्रद्धा से २ प्रसन्न ३ कल के वादे के फरेव
 पर ४ विदवात

मेरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

मेरी जा अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको !

अभी तक दिल मे तेरे इश्क की कदील^१ रोगन^२ है,
तेरे जलवो से बड़मे-जिन्दगी^३ जन्नत-ब-शामन^४ है।

मेरी रूह अब भी तनहाई मे तुझको याद करती है,
हर इक तारे-नफस मे^५ आरजू वेदार^६ है अब भी ।
हर इक बेरंग साअत^७ मुन्तजिर है तेरी आमद की^८ ,
निगाहे विद्य रही है रास्ता जरकार^९ है अब भी ।

मगर जाने-हूजी^{१०} सदमे सहेगी आखरिश^{११} कब तक ?
तेरी बेमेहरियों पे^{१२} जान देगी आखरिश कब तक ?

तेरी आवाज में सोई हुई शोरीनियां^{१३} आखिर,
मेरे दिल की फमुर्दा^{१४} खलवतो मे^{१५} जा न पायेंगे ।
ये अश्को की फरावानी से^{१६} छु दलाई हुई आखें,
तेरी रझनाइयों की^{१७} तमकनत को^{१८} भूल जायेंगी ।

१. मगान २. प्रतागमान ३. जीवन की नभा ४. न्यगं नमान
५. प्यान ६. जानी हुई ७. वरत ८. आगनन की ९. चुनहना
१०. दुग्ती प्राण ११. आखिर १२. निगृहताओं पर १३. मिठानें
१४. उग्रान १५. एवात मे १६. बहनता मे १७. मुन्दरता की
१८. गान की

पुकारेंगे तुम्हे तो लब कोई लज्जत^१ न पायेंगे,
गुल्लू में^२ तेरी उल्फत के तराने सूख जायेंगे ।

मुवादा^३ यादहाये अह्द-माजी^४ महव^५ हो जायें,
ये पारीना फसाने^६ मौजहाये गम मे^७ खो जायें ।
मेरे दिल की तहो से तेरी सूरत घुल के बह जाये,
हरीमे-इश्क की शमअ-दररूशां बुक के रह जाये ।

मुवादा अजनबी दुनिया की जुल्मत^८ घेर ले तुम्ह को ।
मेरी जा अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुम्ह को ॥

१ आनन्द २ कठ मे ३ भगवान न करे कि ऐसा हो ४. पुरानी पादें ५ दिस्मृत ६ पुरानी (प्रेम) कहानिया ७. गम की तहरो मे ८. अघकार

सोच

क्यों मेरा दिल शाद^१ नहीं है, क्यों खामोश रहा करता हूँ ?
 छोड़ो मेरी राम कहानी, मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ ॥
 मेरा दिल गमगीन है तो क्या, गमगी ये दुनिया है सारी ।
 ये दुख तेरा है न मेरा, हम सब की जागीर है प्यारी ॥
 तू गर मेरी भी हो जाये, दुनिया के गम यूँही रहेंगे ।
 पाप के फदे, जुल्म के वधन, अपने कहे से कट न सकेंगे ॥
 गम हर हालत में मोहलक^२ है, अपना हो या श्रौर किसी का ।
 रोना-धोना, जी को जलाना, यू भी हमारा यू भी हमारा ॥
 क्यों न जहाँ का गम अपना लें, वाद में सब तदवीरें सोचें ।
 वाद में सुख के सपने देखें, सपनों की ताबीरे^३ सोचें ॥
 बेफिक्रे घन-दीलत वाले, ये आखिर क्यों खुश रहते हैं ?
 इन का मुख आपस में बाँटें, ये भी आखिर हम जैसे हैं ॥
 हम ने माना जंग फड़ी है, सर फूटेंगे खून वहेगा ।
 खून में गम भी वह जायेंगे, हम न रहें, गम भी न रहेगा ॥

कुत्त

ये गलियो के आवारा बेकार कुत्ते,
 कि बख्शा गया जिनको जौके-गदाई^१ ।
 जमाने की फटकार सरमाया^२ इनका,
 जहा-भर की दुतकार इनकी कमाई ।
 न आराम शव को न राहत सवेरे,
 गुलाजत मे^३ घर नालियो में बसेरे ।
 जो विगडें तो इक दूसरे से लडा दो,
 जरा एक रोटी का टुकडा दिखा दो ।
 ये हर एक की ठोकरें खाने वाले,
 ये फाको से उकता के मर जाने वाले ।
 ये मजलूम मखलूक^४ गर सर उठाये,
 तो इन्सान सब सरकशी^५ भूल जाये ।
 ये चाहे तो दुनिया को अपना बनालें,
 ये आकाओ की हड्डिया तक चवालें ।
 कोई इनको एहसासे-जिल्लत^६ दिला दे,
 कोई इनकी सोई हुई दुम हिला दे ।

१ भीख मागने की अभिरुचि २ निधि ३ गदगी मे ४ सृष्टि

५ भवसा ६ अपमान की चेतना

तनहाई

फिर कोई आया दिले-ज़ार^१ ! नहीं, कोई नहीं !
 राहरी^२ होगा, कही और चला जायेगा ।
 ढल चुकी रात विखरने लगा तारो का गुवार,
 लड़खड़ाने लगे एवानो मे^३ ह्वावीदा^४ चिराग,
 सो गई रास्ता तक-तक के हर इक राहगुज़ार^५ ,
 अजनबी खाक ने घुदला दिये कदमों के सुराग^६ ,
 गुल करो^७ शम्मे, वढा दो मै-ओ-मीना-ओ-ग्रयाग^८ ,
 अपने वेह्वाव^९ किवाड़ों को मुकफ़ल कर लो^{१०} ।
 अब यहा कोई नहीं, कोई नहीं आयेगा ।

१. दुगी मन २. राही ३. महली मे ४. सोये हुए ५. मार्ग
 ६. चिह्न ७. बुझा दो ८. सुराही, प्याले और शराब जथा दो ।
 ९. जिनही आसों में नींद नहीं, मर्याद गुने हुए १०. ताने लगा लो

बोल.....

बोल कि लव आज़ाद हैं तेरे,
बोल, ज़वा अब तक तेरी है।
तेरा सुतवा^१ जिस्म है तेरा,
बोल कि जा अब तक तेरी है।

देख कि आहगर की^२ दुका मे,
तुन्द^३ हैं शोले, सुख है आहन^४।
खुलने लगे कुफलो के^५ दहाने^६,
फैला हर इक ज़जीर का दामन।

बोल, ये थोड़ा वक्त बहुत है,
जिस्मो-ज़वा की मीत से पहले।
बोल कि सच ज़िन्दा है अब तक,
बोल, जो कुछ कहना है कहले।

आखरी खत

वो वक़्त मेरी जान बहुत दूर नहीं है
जब दर्द से रुक जायेंगी सब जीस्त की^१ राहें
और हृद से गुज़र जायेगा अन्दोहे-निहानी^२
थक जायेंगी तरसी हुई नाकाम निगाहें
छिन जायेगे मुझ से मेरे आंसू मेरी आहें
छिन जायेगी मुझसे मेरी बेकार जवानी
शायद मेरी उल्फ़त को बहुत याद करोगी
अपने दिले - मासूम को नाशाद^३ करोगी
आओगी मेरी गोर पे^४ तुम अश्क^५ वहाने
नीखेज^६ वहारो के हसी फूल चढाने
शायद मेरी तुरवत को^७ भी ठुकरा के चलोगी
शायद मेरी बेसूद वफ़ाओं पे हसोगी
इन वजअ-ए-करम का^८ भी तुम्हें पाम^९ न होगा
लेकिन दिले - नाकाम को एहसास न होगा
अलकिस्सा^{१०} माआले-गमे-उल्फ़त पे^{११} हँसो तुम
या अश्क बहाती रहो, फर्याद करो तुम
माजी पे^{१२} नदामत हो तुम्हें या कि मसरत
खामोश पज़ा सोएगा वामांदा - ए - उल्फ़त^{१३}

१. जीवन की २. भीतरी दुःख ३. दुःखित ४. उग्र पर
५. आंसू ६. नई ७. कद को ८. कृपा के टुकड़ा ९. निहाज
१०. नदीप में वह कि ११. प्रेम के दुःख के परिणाम पर १२. प्रतीक
पर १३. प्रेम के लक्ष्य आनन्द

ऐ दिले-बेताब ठहर ।

तीरगी^१ है कि उमडती ही चली आती है,
शव की^२ रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे ।
चल रही है कुछ इस अदाज से नब्जे - हस्ती^३ ,
दोनो आलम का^४ नशा टूट रहा हो जैसे ।

रात का गर्म लहू और भी वह जाने दो,
यही तारीकी^५ तो है गाजा-ए-रुख्तारे-सहर^६ ,
सुवह होने ही को है ऐ दिले - बेताब ठहर ।

अभी जंजीर छनकती है पसे-पर्दा - ए - साज^७ ,
मुतलक-उलहुक्म^८ है शीराजाए-असवाव^९ अभी ।
सागरे - नाव में^{१०} आसू भी ढलक जाते हैं,
लगजिशे-पा मे^{११} है पावदी-ए-आदाव^{१२} अभी ।

अपने दीवानो को दीवाना तो बन लेने दो ।

अपने मँखानो को मँखाना तो बन लेने दो ॥

जल्द ये सतवते-असवाव^{१३} भी उठ जायेगी ।

ये गिरावारी-ए-आदाव^{१४} भी उठ जायेगी ॥

स्वाह जंजीर छनकती ही छनकती ही रहे ॥

१ अन्वकार २ रात की ३ जीवन की नाडी ४ दुनियाओं
का ५ अन्वकार ६ सुवह के गालो की नालिमा ७ साज के
पर्दे के पीछे ८ मर्वोपरि आज्ञा देने वाला ९ कारणो की एकत्रता
१० शराब के प्याले मे ११ पाँव की ढगमगाहट मे १२ झूठे
शिष्टाचार की पावन्दी १३ कारणो का दबदबा या आतक १४ (झूठे)
शिष्टाचार का असह्य बोझ

मौजूए-सुखना†

गुल हुई जाती है^१ अफ़सुर्दा^२ सुलगती हुई शाम,
धुल के निकलेगी अभी चग्मा-ए-महताव से^३ रात ।
श्रीर—मुझ्ताक निगाहो से सुनी जायेगी,
श्रीर—उन हाथो से मस^४ होंगे ये तरसे हुए हात ॥

उन का आंचल है कि रुखसार^५ कि पंराहन^६ है,
कुछ तो है जिस से हुई जाती है चिलमन रगी ।
जाने उस जुल्फ को मौहूम^७ घनी छाओं मे,
टिमटिमाता है वो आवेजा^८ अभी तक कि नही ?

आज फिर हुस्ने-दिलारा की^९ वही घज होगी,
वही ह्वावीदा सी^{१०} आँखें, वही काजल की लकीर ।
रंगे-रुखसार पे^{११} हल्का सा वो गाज़े का गुवार,
संदली हाथ पे घुंदली सी हिना की^{१२} तहरीर^{१३} ॥

अपने अफ़कार की^{१४}, अशआर की^{१५} दुनिया है यही ।
जाने-मजूम^{१६} है यही, शाहिदे-माने^{१७} है यही ॥

† गाय्य-विषय

१. बुरू रही है २. उदास ३. चाद के चरमे से ४. स्वर्ण
५. कपोल ६. निवान ७. भ्रममूलक ८. गान का बुँदा
९. रमझोक नौन्दर्य की १०. स्पग्निन ती ११. कपोलों के रग पर
१२. माहनी ती १३. चिप्रयारी १४. रचनाशो की १५. नेरो की
१६. विषय की जान १७. पपों का प्रत्यक्षदर्शी या माशी

आज तक सुखों-सियाह सदियों के साये के तले,
आदमो-हब्बा की आलाद पे^१ क्या गुजरी है ?
मौत और जीस्त^२ की रोजाना सफ-आराई मे^३ ,
हम पे क्या गुजरेगी, अजदाद पे^४ क्या गुजरी है ?

इन दमकते हुए शहरो की फरावा^५ भखलूक^६ ।
क्यो फकत मरने की हसरत मे जिया करती है ?
ये हसी खेत, फटा पढता है जोवन जिनका,
किस लिए इन मे फकत भूख उगा करती है ?

ये हर एक सिम्त^७ पुरअसरार^८ कडी दीवारें,
जल बुझे जिन मे हज्जारो की जवानी के चिराग ।
ये हर एक गाम पे^९ उन रुवावो की मक्तल-गाहे^{१०} ,
जिनके परती से^{११} चिरागां^{१२} हैं हज्जारो के दिमाग ॥

ये भी हैं ऐसे कई और भी मज्मू^{१३} होंगे,
लेकिन उस शोख के आहिस्ता से खुलते हुए होट,
हाय उस जिस्म के कम्बख्त दिलावेज खुतूत^{१४} ,
आप ही कहिये कही ऐसे भी अफसू^{१५} होंगे ?

अपना मौजू-ए-सुखन इन के सिवा और नही ।
तवए-शायर का^{१६} वतन इन के सिवा और नहीं ।

१ सतान पर २ जीवन ३ मग्राम मे ४ पुरखों पर
५ प्रचुर ६ जनता ७ और ८ रहस्यपूर्ण ९ पग पर
१०. बघ-स्यान ११ प्रतिविम्ब ने १२ दीप्तिमान १३ विषय
१४ हृदयाकर्षक रेगार्ये (वनावट) १५ जादू १६. शायर की प्रकृति

आज की रात

आज की रात साजे-दर्द न छेड़ !

दुख से भरपूर दिन तमाम हुए
 और कल की सबर किसे मालूम ?
 दोशो-फर्दा की^१ मिट चुकी है हद्द^२
 हो न हो अब सहर किसे मालूम ?

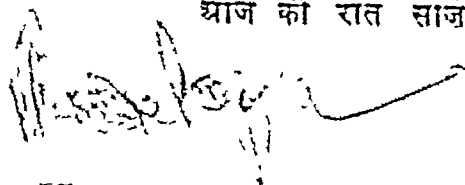
जिन्दगी हेच ! लेकिन आज की रात
 एजदियत^३ है मुमकिन आज की रात

आज की रात साजे-दर्द न छेड़ !

अब न दोहरा फसान-हाए-अलम^४
 अपनी किल्मत पे सोगवार^५ न हो
 फिक्रे-फर्दा^६ उतार दे दिल से
 उम्मे-रपता पे^७ अशकवार न हो^८ ।

अहदे-नाम की हिकायतें^९ मत पूछ
 हो चुकी सब गिकायतें मत पूछ

आज की रात साजे-दर्द न छेड़ !



१. अतीत और भविष्य की २. मौनावें ३. गुराई ४. दुग
 की सूरनियां ५. उराम ६. जल की चिन्ता ७. चीली भागु पर
 ८. भांगु न रहा ९. दुग जे शिनी की सूरनियां

शाहराह

एक अफसुर्दा^१ शाहराह^२ है दराज^३ ,
दूर उफक^४ पर नजर जमाये हुए ।
सर्द मिट्टी पे अपने सीने के,
सुरमगी^५ हुस्त को बिछाये हुए ॥

जिस तरह कोई गम-जदा^६ औरत,
अपने वीरा कदे में^७ महवे-ख्याल^८ ।
वस्ले - महदूव के^९ तसव्वुर मे^{१०} ,
मू-व-मू^{११} चूर, अजू-अजू^{१२} निढाल ॥

१ उदास २ राजमार्ग ३ फैली हुई ४ क्षितिज पर
५ सुरमे के रंग जैसा ६ शोकातुर ७ वीरान घर मे ८ चिंतामो
मे झूठी हुई ९ पिया मिलन के १० कल्पना मे ११ बाल-बाल
१२ अग-अग

मेरे हमदम मेरे दोस्त !

गर मुझे इस का यकीं हो, मेरे हमदम मेरे दोस्त !

गर मुझे इस का यकीं हो कि तेरे दिल की धकन
 तेरी आंखों की उदासी, तेरे सीने की जलन
 मेरी दिल-जोई, मेरे प्यार ने मिट जायेगी
 गर मेरा हर्फें-तसल्ली^१ वो दवा हो जिम से
 जी उठे फिर तेरा उजड़ा हुआ बेनूर दिमाग
 तेरी पेशानी से घुल जायें ये तजनील के^२ दाग
 तेरी बीमार^३ जवानी को शफा हो जाये
 गर मुझे इस का यकीं हो, मेरे हमदम मेरे दोस्त
 मैं तुम्हें भीच नूं सीने से लगा नूं तुम्हें को
 रोज़ो-शब^४, शामो-सहर^५ मैं तुम्हें वहलाता रहूँ
 मैं तुम्हें गीत चुनाता रहूँ हल्के, शीरी,
 आवशारी के^६, बहारो के, चमन-जारों के^७ गीत
 आमदे-सुबह के^८, महताब के^९ सय्यारो के^{१०} गीत
 तुम्हें से मैं हुस्नो-मोहब्बत की हिकायात^{११} कहूँ

१. जलन का दवा २. अफगान के ३. रोजी ४. दिन-रात
 ५. दुइह-शाम ६. नरनों के ७. दागों के ८. सुबह के आगमन के
 ९. चाँद के १०. नक्षत्रों के ११. कल्पनियाँ

.....तुम्हारे हुस्न के नाम !

सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम ।

बिखर गया जो कभी रगे-पैरहन^१ सरे-बाम^२
निखर गई है कभी सुबह, दोपहर, कभी शाम
कही जो कामते-जेबा पे^३ सज गई है कबा^४
चमन में सर्वो-सनोवर^५ सवर गये हैं तमाम
वनी विसाते-गजल^६ जब डबो लिये दिल ने
तुम्हारे साया-ए-रुखसारो-लब मे^७ सागरो-जाम
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम ।

तुम्हारे हात पे^८ है ताविशे-हिना^९ जब तक
जहा मे वाकी है दिलदारिये-उरुसे-सुखन^{१०}
तुम्हारा हुस्न जवा है तो मेहरवा है फलक^{११}
तुम्हारा दम है तो दमसाज^{१२} है हवा-ए-वतन^{१३}
अगरचे तग हैं औक्रात^{१४}, सख्त हैं आलाम^{१५}
तुम्हारी याद से शीरी^{१६} है तल्खी-ए-अय्याम^{१७}
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम ।

(जेल में)

१ लिवास का रग २ छत पर ३. हृदयाकर्पक क्रद (शरीर) पर
४ कुर्ता (लिवास) ५ वृक्षों के नाम ६ गजल बन गई ७ कपोलों
और होटो की छाया में ८ हाथ पर ९ महदी की आभा १० कविता
रूपी दुल्हन की दिलदारी ११ आकाश १२ मित्र १३ देश की
हवा १४ नमय १५ दुख १६ मधुर १७ जीवन की कटुता

दो इशक

(१)

ताजा हूँ अभी याद मे ऐ साकी-ए-गुलफाम^१ ,
 वो अक्से-रुखे-यार से^२ लहके हुए अय्याम^३ ।
 वो फूल-सी खिलती हुई दीदार की^४ साअत^५ ,
 वो दिल-सा धडकता हुआ उम्मीद का हंगाम^६ ॥

उम्मीद कि लो जागा गमे-दिल का नसीवा,
 लो शौक की^७ तरसी हुई शव हो गई आखिर ।
 लो दूब गये दर्द के बेख्वाब मितारे,
 अब चमकेगा बेसन्न निगाहो का मुकद्दर ॥

इस वाम से निकलेगा तेरे हुस्न का खुरशीद^८ ,
 उस कुंज से फूटेगी किरन रंगे-हिना की^९ ।
 इस दर से बहेगा तेरी नपतार का सीमाव^{१०} ,
 इस राह पर फूलेगी दाफक तेरी कवा की^{११} ॥

१. वृत्त जंगे रंग वाला २. प्रेमिला के मुगडे के प्रतिविम्ब मे
 ३. दिन (जीवन) ४. दर्शन की ५. दाए ६ समन ७ दस्त की
 ८ खुरज ९ नहरी के रंग की १०. पारा ११. हुन (जियाम) की

निसार में तेरी गलियों पे...

निसार में तेरी गलियो पे ऐ वतन कि जहा,
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले ।
जो कोई चाहने वाला तवाफ को^१ निकले,
नज़र चुराके चले, जिस्मो-जा बचाके चले ।

है अहले-दिल के लिए अब ये नज़मे-बस्तो-कुशाद^२ ,
कि सगो-खिश्त^३ मुकय्यद^४ हैं और सग^५ आज़ाद ।

बहुत है जुल्म के दस्ते-बहाना-झू के^६ लिये,
जो चन्द अहले - जुनू^७ तेरे नाम-लेवा हैं ।
वने हैं अहले-हवस^८ मुद्ई भी, मुन्सिफ भी,
किसे वकील करें, किससे मुन्सिफी चाहे ?

मगर गुज़ारने वालो के दिन गुज़रते हैं,
तेरे फिराक में यूँ सुबहो - शाम करते हैं ।

बुझा जो रोज़ने-ज़िदां^९ तो दिल ये समझा है,
कि तेरी माग सितारो से भर गई होगी ।
चमक उठे हैं सलासिल^{१०} तो हमने जाना है,
कि अब सहर^{११} तेरे रुख पर^{१२} बिखर गई होगी ।

१ परिक्रमा के लिए २ खोल-बाध की व्यवस्था ३ ई ट पत्यर
४ क़ैद ५ कुत्ते ६ बहाना बनाने वाले के हाथ के ७ लोलुप
८ कारागार का झरोखा ९ वेडियाँ १० सुबह ११ मुखड़े पर

गरज तसव्वुरे - शामो - सहर मे^१ जीते हैं,
गिरफते - साया - ए - दीवारो - दर मे^२ जीते हैं ।

युँही हमेशा उलझती रही है जुल्म से खल्क^३ ,
न उनकी रस्म नई है, न अपनी रीति नई ।
युँही हमेशा खिलाये हैं हमने आग मे फूल,
न उनकी हार नई है न अपनी जीत नई ।

इसी सबब से फलक का गिला नहीं करते,
तेरे फिराक मे हम दिल बुरा नहीं करते ।

गर आज तुझसे जुदा है तो कल वहम^४ होंगे,
ये रात भर की जुदाई तो कोई बात नहीं ।
गर आज औज पे^५ है तालए-रकीब^६ तो क्या !
ये चार दिन की खुदाई तो कोई बात नहीं ।

ये तुझसे अहदे - वफा उस्तवार^७ रखते हैं,
इलाजे - गर्दिशे - लैलो - नहार^८ रखते हैं ।

(जेल में)

१ सुबह और शाम की मन्ना मे २ दीवारों और दरवाजों के
साथों की पकड़ में ३ जन्ता ४. इनटूटे ५. जनाई पर ६ प्रतिद्वन्द्वी
या भाव्य ७ प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा की सुहृद ८. गत-दिन के
सवार का शत्रु

जग ठहरी है कोई खेल नही है ऐ दिल !
 दुश्मने-जा हैं सभी, सारे के सारे कातिल,
 ये कडी रात भी, ये साये भी, तनहाई भी,
 दर्द और जग मे कुछ मेल नही है ऐ दिल !

लाओ सुलगाओ कोई जोशो-गज़ब का^१ अगार^२ !
 तैश की^३ आतिशे-जरार^४ कही से लाओ,
 वो दहकता हुआ गुलज़ार कही से लाओ,
 जिसमे गर्मी भी है, हरकत भी, तवानाई^५ भी !

हो न हो अपने कबीले का भी कोई लश्कर,
 मुन्तज़िर होगा अघेरे की फसीलो के^६ उधर ।

इनको शोलो के रजज़^७ अपना पता तो देंगे,
 खैर, हम तक न वो पहुंचे भी, सदा^८ तो देंगे,
 दूर कितनी है अभी सुबह, बता तो देंगे !

(जेल मे)

१ उत्तजना और क्रोध का २. अगारा ३ क्रोध की ४ प्रचढ़
 अग्नि ५ शक्ति ६ शहरपनाहो के ७ वे शेर जो युद्धक्षेत्र में
 स्वयं पड़े जाते हैं ८ आवाज

कोई आशिफ किसी महवूबा से

याद की राहगुजर जिस पे इसी सूरत से
 मुदतें बीत गई है तुम्हे चलते-चलते
 खत्म हो जाये जो दो-चार कदम और चलो
 मोड़ पड़ता है जहा दस्ते-फरामोशी का^१
 जिससे आगे न कोई मै हूं न कोई तुम हो
 रांस थामे हैं निगाहे कि न जाने किस दम
 तुम पलट आओ, गुजर जाओ या मुडकर देखो
 गरचे वाकिफ हैं निगाहें कि ये नव घोखा है
 गर कही तुमसे हम-आगोश^२ हुई फिर से नजर
 फूट निकलेगी वहा और कोई राहगुजर^३
 फिर उमी तरह जहां होगा मुकाबिल पैहम^४
 साया-ए-ज़ुल्फ का^५ और जु'दिये-ब्राजू का^६ सफर
 दूसरी बात भी भूठी है कि दिल जानता है
 यां कोई मोड़, कोई दस्त, कोई घात नहीं
 ज़िमके पदों में मेरा माहे-रवा^७ डूब सके
 तुमसे चलती रहे ये राह, बुही भच्छा है
 तुमने मुड कर भी न देखा तो कोई बात नहीं ।
 (जेल में)

१. विनमृति के जंगल या २. धानिगन-बद्ध ३. मार्ग
 ४. निरतर मामना ५. नेगों की छाया ६. राहों के हिनदे टोसने
 वा ७ गतिगीन बाद

शीशो का मसीहा^१ कोई नहीं !

मोती हो कि शीशा, जाम^२ कि दर^३
जो टूट गया सो टूट गया
कव अश्को से^४ जुड सकता है
जो टूट गया, सो छूट गया

तुम नाहक टुकडे चुन-चुन कर
दामन में छुपाये बैठे हो
शीशो का मसीहा कोई नहीं
क्या आस लगाये बैठे हो

शायद कि इन्ही टुकडो में कही
वो सागरे-दिल^५ है जिसमें कभी
सद नाज से^६ उतरा करती थी
सहवाए-गमे-जाना की^७ परी

फिर दुनिया वालो ने तुम से
ये सागर लेकर फोड़ दिया
जो मैं थी वहा दी मिट्टी मे
मेहमान का शह-पर^८ तोड दिया

१ हज़रत मसीह (बीमारो को अच्छा और मुर्दों को जीवित करने वाला) २ शराब का प्याला ३ दरवाज़ा ४ आंसुओ से ५ हृदय रूपी शराब का प्याला ६ बड़े गर्व से ७ प्रेयसी के ग्रम की शराब की ८ नव से बढा और मजबूत पक्व

ये रंगी रेजे^१ हैं शाहिद
 उन शोख बलूरी सपनों के
 तुम मस्त जवानी में जिन से
 खलवत को^२ सजाया करते थे

नादारी^३, दफ़तर, भूख और गम
 इन सपनों से टकराते रहे
 बेरहम था चौमुख पथराओ
 ये काच के ढाँचे बया करते

या शायद इन ज़रों में कहीं
 मोती है तुम्हारी इज्जत का
 वो जिस से तुम्हारी इज्जत पे भी
 शमशाद-कदो ने^४ रसक^५ किया

इस माल की घुन में फिरते थे
 ताजिर भी बहुत, रहज़न^६ भी बहुत
 है चोर नगर, या मुफ़लिस की
 गर जान बची तो श्रान गई

ये सागरो-शोशे लालो-गुहर
 मालम हो तो कीमत पाते हैं
 सूं टुकड़े-टुकड़े हों तो फ़कत
 चुभते हैं, लह रनवाते हैं

१. रंगीन टुकड़े २. एकात या धयनागर को ३. दारदरता
 ४. शमशाद नामाक गृह के मरनाग केने गद वालो ने ५. रंगी ६. शत्रु

अंजाम^१

हैं लवरेज^२ आहो से ठडी हवाएं,
 उदासी में डूबी हुई हैं घटाए ।
 मोहब्बत की दुनिया पे शाम आ चुकी है,
 सियाह-पोश^३ हैं जिन्दगी की फजाए^४ ।
 मचलती हैं सीने में लाख आरजूए^५ ,
 तडपती हैं आंखों में लाख इल्तजाए^६ ।
 तगाफुल^७ के आगोश^८ में सो रहे हैं,
 तुम्हारे सित्तम^९ और मेरी वफाए ।

मगर फिर भी ऐ मेरे मासूम^{१०} कातिल^{११} !
 तुम्हें प्यार करती हैं मेरी दुआए !!

१ अन्त, परिणाम २ भरी हुई ३ अन्धकारपूर्ण ४ जीवन का वातावरण ५ अभिलाषाएँ ६ आत्म-निवेदन ७ उदासीनता ८ गोद ९ अत्याचार १० अवोध ११ हत्यारे

हसीना-ए-खयाल^१ से

मुझे देदे—

रसीले होंट, मासूमाना पेयानी^२, हसी आखे,
कि मैं इक वार फिर रगोनियो में गकं हो जाऊं,
मेरी हस्ती को^३ तेरी इक नजर आगोश^४ में ले ले,
हमेशा के लिए इस दाम^५ में महफूज^६ हो जाऊं,
जिया-ए-हुस्न^७ से जुल्माते-दुनिया^८ में न फिर आऊ।

गुज्रता^९ हसरतो^{१०} के दाग मेरे दिल से धुल जाएं,
मैं आने वाले गम की फिक्र से आजाद हो जाऊं।

मेरे माजी व मुस्तकबिल^{११} सरासर महव^{१२} हो जाएं,
मुझे वो इक नजर, इक जाविदानी^{१३} सी नजर दे दे।

(ब्राउनिंग)

१ बलना-भुररी २. मोनापन निग हुए नापा ३. अस्तित्व
को ४. गोर ५. पन्दे ६. सुरगिह ७ नौन्दगं की घाना
८ गनार के घन्धार ९ पुराने १० अतृप्त अभिजापामों
११ भूत व भविष्य १२ विमृत १३. मनर

इन्तज़ार

गुज़र रही हैं शबो-रोज़^१ तुम नहीं आती ।

रियाज़े-ज़ीस्त^२ है आजुर्दा - ए - बहार^३ अभी,
मेरे खयाल की दुनिया है सोगवार^४ अभी ।

ओ हसरतें^५ तेरे गम की कफ़ील^६ हैं प्यारी,
अभी तलक मेरी तनहाइयो में बसती हैं ।
तवील^७ रातें अभी तक तवील हैं प्यारी,
उदास आखें अभी इन्तज़ार करती हैं ।

बहारे-हुस्न^८ पे पावन्दी-ए-जफा^९ कब तक ?
ये आज़माइशे - सत्रे - गुरेज़-पा^{१०} कब तक ?

कसम तुम्हारी बहुत गम उठा चुका हूँ मैं ।
गलत था दावा-ए-सत्रो-शकेब^{११}, आ जाओ ।
करारे - खातिरे - वेताब थक गया हूँ मैं ॥

१ रात-दिन २. जीवन का उद्यान ३ वसन्त-ऋतु से वचित
४ शोकपूर्ण ५ अतृप्त आकांक्षाएँ ६ जमानत ७ लम्बी
८ मीन्दर्य की वसन्त-ऋतु ९ अत्याचारों का बन्धन १०. (सघर्ष से)
बचने की इच्छा रखने वाले धैर्य की परीक्षा ११ धैर्य और सहन-
शक्ति का दावा

हस्त और मौत

ओ फूल सारे गुलिस्तां में नवसे अच्युता हो,
 फरोगे-नूर^१ हो जिससे फिजाए-रंगी^२ में,
 खिजा^३ के जोरो-सितम^४ को न जिसने देखा हो,
 बहार ने जिसे खूने - जिगर से पाना हो,
 वो एक फूल समाता है चश्मे-गुलची^५ में ।
 हजार फूलों से आवाद वागे - हस्ती^६ है,
 अजल^७ की आय फकत एक को तरसती है ।
 कई दिलों की उमोदों का जो सहारा हो ।
 फिजा-ए-दहर की आलूदगी^८ से वाला^९ हो ।
 जहाँ में आके अभी जिसने कुछ न देखा हो ।
 न कहते ऐशो-मुसरंत^{१०}, न गम की अरजानी^{११},
 किनारे-रहमते-हक^{१२} में उसे गुलाती है,
 सहूते-शव^{१३} में फरिश्तों की मसिया-द्वानी^{१४} ।
 तवाफ^{१५} करने को सुबह-ए-बहार आती है,
 मवा^{१६} चटाने को जन्नत के फूल लाती है ।

१. प्रभाव में बढोत्तरी २. रंगीन वातावरण ३. पतञ्जल
 ४. अत्याचार और क्रूरता ५. पून चुनने जाने की दृष्टि में ६. दोषन
 र्णों उघात ७. मृत्यु, यमदूत ८. दृष्टि के वातावरण की निष्ठा
 ९. लपट (नितिस) १०. ऐश्वर्य एवं गुण की कमी ११. दुःखों की
 बृत्तिका १२. ईश्वर की कृपा को प्रदान करती है १३. रात्रि की
 निम्नस्थता १४. शोक-नीति १५. परिष्कार १६. प्रभाव-मनीर

मेरे नदीम^१ ...

खयालो-शेर^२ की दुनिया में जान थी जिन से,
फिजाए-फिक्रो-अमल^३ अरगवान^४ थी जिन से,
वो जिनके नूर^५ से शादाब^६ थे महो-अजुम^७,
जनूने-इश्क की हिम्मत जवान थी जिन से,

वो आरजूए^८ कहा सो गई हैं मेरे नदीम ?

वो नासबूर^९ निगाहें, वो मुन्तज़िर राहे,
वो पासे-ज़व्त^{१०} से दिल मे दबी हुई आहे,
वो इन्तज़ार की रातें, तवील^{११}, तीरह-व-तार^{१२},
वो नीम-ख्वाब शबिस्ता^{१३}, वो मखमली बाहे,

कहानिया थी, कही खो गई हैं मेरे नदीम !

मचल रहा है रगे-ज़िन्दगी मे खूने-बहार,
उलझ रहे है पुराने गमो से रूह के तार,
चलो, कि चलके चिरागा^{१४} करें दियारे-हबीव^{१५},
हैं इन्तज़ार मे अगली^{१६} मोहब्बतो के मज़ार^{१७},

मोहब्बतें जो फना^{१८} हो गई हैं मेरे नदीम !

-
- १ मित्र, साथी २ विचार और काव्य ३ विचार और कर्म
का वातावरण ४ लाल (रंगीन) ५ ज्योति ६ आप्लावित,
परिपूर्ण ७. चांद और तारे ८ आकाशाएँ ९ वेचैन, अधीर
१० सहन करने का लिहाज़ ११ लम्बी १२ अन्वकारपूर्ण
१३ अर्ध-जाग्रत गयनागार १४ दीप-मालिका १५ प्रिय मित्र के
घर १६ पहली, पुरानी १७ प्रेम की समाधियाँ १८ विनष्ट

मर्गें-सोजे-मोहव्वत^१

आओ कि मर्गें-सोजे-मोहव्वत मनाएं हम,
 आओ कि हृस्ने-माह^२ से दिल को जलाएं हम ।
 सुश हो फिराके-कामतो-रहमारे-यार^३ मे,
 सर्वो-गुलो-समन^४ से नजर को सताएं हम ।
 वीरानी-ए-ह्यात को^५ वीरानतर^६ करे,
 ले नासह^७ ! आज तेरा कहा मान जाएं हम ।
 फिर ओट लेके दामने-अन्ने-ग्रहार को^८ ,
 दिल को मनाएं हम कभी आंभू बहाएं हम ।
 सुलभाएं वेदिली से ये उलभे हुए मवाल,
 वां जाए या न जाए, न जाएं कि जाएं हम ।
 फिर दिल को पासे-जव्वत^९ की तलकीन^{१०} कर चुकें,
 और इस्तहाने-जव्वत^{११} से फिर जी चुराएं हम ।
 आओ कि आज खत्म हूई दास्ताने-इश्क^{१२},
 अब खत्म-आशिकी^{१३} के फ़माने^{१४} मुनाएं हम ।

१. प्रेम की जलन की मृत्यु (घन्त) २. चन्द्रमा के सौन्दर्य
 ३. प्रेयसी के पतंगों और कन्दे कद के प्रियों ने ४. मर्गें नामक पेड़
 (जिन्हें लोहे के की उतमा दी जाती है) तथा फूटो (जिनमें कत्तीनी
 की उतमा दी जाती है) ५. जीवन की वीरानी को ६. और प्रियत
 वीरान ७. उपदेशक ८. वास्त-गानु के बापल के पन्ने की ९. मात
 करने की परिभाषा १०. उतमा ११. धर्म की परीक्षा १२. प्रेम
 की गहानी १३. वह प्रेम जो समाप्त हो चुका है १४. फ़तानिजी

तराना

दरबारे-वतन में जब इक दिन सब जाने वाले जाएगे,
कुछ अपनी सजा को पहुँचेंगे, कुछ अपनी जजा^१ ले जाएगे ।

ऐ खाक-नगीनो^२ ! उठ बैठो वो वक्त करीब आ पहुँचा है,
षव तख्त^३ गिराए जाएगे, जब ताज उछाले जाएगे ।

अब दूर गिरेंगी ज़जोरें, अब जिन्दानो की^४ खैर नही,
बो दरिया भूम के उठेंगे, तिनको से न टाले जाएगे ।

कटते भी चलो बढ़ते भी चलो, बाजू भी बहुत हैं सर भी बहुत,
चलते भी चलो कि अब डेरे मज़िल पे ही डाले जाएगे ।

ऐ जुल्म के मारो ! लब खोलो चुप रहने वालो चुप कब तक,
कुछ हश्र^५ तो इन से उठेगा, कुछ दूर तो नाले^६ जाएगे ।

१ बदला २ घूल-मिट्टी में रहने वालो ३ राज्ज-सिंहासन
४ कारागारों की ५ प्रलय, विनाश ६ आर्तनाद

गज़ले

दोनो जहान तेरी मोहब्बत में हार के ।

वो जा रहा है कोई शबे-नाम गुज़ार के ॥

वीरां है मक़दा खुमो-सागर^१ उदास हैं ।

तुम क्या गये कि रुठ गये दिन बहार के ॥

इक फुर्मते-गुनाह^२ मिली, वो भी चार दिन ।

देगे हैं हमने हीसने परवरदिगार के^३ ॥

दुनिया ने तेरी वाद से वेगाना कर दिया ।

तुम्ह से भी दिताफ़रेव^४ हैं ग़म रोज़गार के^५ ॥

भूले से मुत्करा तो दिये थे वो आज 'फँज' ।

मत पूछ बलबले दिले-नाक़र्दाकार के^६ ॥



१. पाराब या प्याना घौर मटरी २. पाप करने का अर्थाना
३. अफ़दान में ४. दूरयात्रांत ५. सांसारिक ग़म ६. अनुभव-
हीन दिल के

हम पर तुम्हारी चाह का इल्जाम ही तो है,
 दुश्नाम^१ तो नहीं है ये अक्राम^२ ही तो है ।
 करते हैं जिसपे तअन^३ कोई जुर्म तो नहीं,
 शौके-फजलो-उल्फते-नाकाम^४ ही तो है ।
 दिल नाउमीद तो नहीं नाकाम^५ ही तो है,
 लम्बी है गम की शाम मगर शाम ही तो है ।
 दस्ते-फलक मे^६ गर्दिशे-तकदीर^७ तो नहीं,
 दस्ते-फलक मे गर्दिशे-अय्याम^८ ही तो है ।
 आखिर तो एक रोज़ करेगी नज़र वफा,
 वो यार खुश-खसाल^९ सरे-वाम^{१०} ही तो है ।
 भीगी है रात 'फ़ौज' गज़ल इब्तदा^{११} करो,
 वक्ते-सरोद^{१२} दर्द का हगाम^{१३} ही तो है ।

१ गाली, (बुराई) २ अनुग्रह ३ व्यग ४ व्यर्थ की चाह
 तथा असफल प्रेम ५ असफल ६ आकाश (विघाता) के हाथ मे
 ७ भाग्य-चक्र ८ रात-दिन का चक्र ९ अच्छे स्वभाव वाला १० छत
 के सिरे पर ११ प्रारम्भ १२ गाने का समय १३ क्षण (अवसर)

तुम आये हो न शबे-इन्तजार^१ गुजरी है ।
 तलाश में है महर^२ , वार-वार गुजरी है ॥
 जुनू में^३ जितनी भी गुजरी व-फार^४ गुजरी है ।
 अगरचे दिल पे खराबी हजार गुजरी है ॥
 हुई है हजरते-नासह से^५ गुफतगू जिम शव ।
 वो शव जरूर मरे-क़ए-वार^६ गुजरी है ॥
 वो बात सारे फसाने में^७ जिमका जिक्र न था ।
 वो बात उनको बहुत नागवार गुजरी है ॥
 न गुल खिले है, न उनसे मिले, न मैं पी है ।
 अजीब रंग में अब के बहार गुजरी है ॥
 चमन पे गारते-गुलची से^८ जाने क्या गुजरी ।
 क़फ़म से^९ आज मदा^{१०} त्रेकनार गुजरी है ॥
 (जेल में)

◊

◊

◊

१. इन्तजार की रात २. मुदत ३. जगह में ४. काम में
 ५. उत्तंगत में ६. प्रेमिया की करी में ७. बगानी में ८. मातों
 की कूट-कूट ९. तिलने में १०. श्रमान नगीर

इस्क मिन्नत-कशे-करार^१ नहीं ।

हुस्न मजबूरे - इन्तज़ार नहीं ॥

तेरी रंजिश की इन्तहा मालूम ।

हसरतो का मेरा शुमार^२ नहीं ॥

अपनी नज़रें बखेर दे सकी ।

मै बश्मदाज़ा - ए - खुमार^३ नहीं ॥

ज़ेरे-लव^४ है अभी तवस्सुमे-दोस्त^५ ।

मुन्तशिर^६ जलवा-ए-बहार^७ नहीं ॥

अपनी तकमील^८ कर रहा हूँ मैं ।

वर्ना तुझसे तो मुझको प्यार नहीं ॥

चारा-ए - इन्तज़ार^९ कौन करे ।

तेरी नफरत भी 'उस्तवार'^{१०} नहीं ॥

'फँज' ज़िन्दा रहें वो हैं तो सही ।

क्या हुआ गर वफा-शुआर^{११} नहीं ॥



१ चैन का आभारी २ गणना ३ नशे के अनुमान के अनुसार
 ४ होंटों में ५ मित्र या प्रेमिका की मुस्कान ६ अस्त-व्यस्त
 ७ बहार का जलवा ८ पूर्ति ९ इन्तज़ार का इलाज १० स्थायी
 ११. वफ़ादार

रंग पैराहन का^१, गुशरू जुल्फ लहराने का नाम
 मौसमे-गुल^२ है तुम्हारे वाम पर^३ आने का नाम ॥
 दोस्तो, उस चदमो-सव की^४ कुछ कहो जिनके वगैर ।
 गुनिस्ता की बात रगी^५ है, न मैखाने का नाम ॥
 फिर नज़र मे फूल महके, दिल मे फिर शम्में जली ।
 फिर तसव्वुर ने^६ लिया उस बज़म मे जाने का नाम ॥
 दिलवरी टहरा जवाने - सल्क^७ खुलवाने का नाम ।
 अब नही लेते परी-रू^८ जुल्फ विखराने का नाम ॥
 अब किसी लैला को भी उकरारे - महसूबी^९ नही ।
 उन दिनो बदनाम है हर एक दीवाने का नाम ॥
 मोहतसिव की^{१०} खैर, ऊंचा है उमी के फंज^{११} से ।
 रिद का, ताकी का, मै का, खुम का^{१२}, पैमाने का नाम ॥
 हम से कहते हैं चमन वाले, गरीवाने - चमन^{१३} !
 तुम कोई अरच्छा सा रख लो अपने वीराने का नाम ॥
 'फंज' उनको है तकाज़ा - ए - वफा^{१४} हम से जिन्हें ।
 आगना के^{१५} नाम से प्यारा है वेगाने का नाम ॥

(जेल में)

१. लियान का २. वनन्त कतु ३. छत पर ४. सानो और
 होटो की ५. लंगीन ६. गलना ने ७. दुनिया की जवान ८. परियों
 एने मुम्बे वाले ९. प्रेमिया होने का इतरार १०. रनाम्पस की
 ११. छत से १२. धागव से कटो का १३. प्रयाना १४. इज्जत का
 तगावा १५. निम्र के

दिल मे अब यू तेरे भूले हुए गम आते हैं ।
 जैसे विछडे हुए काबे मे सनम^१ आते हैं ॥
 एक एक करके हुए जाते हैं तारे रोशन ।
 मेरी मजिल की तरफ तेरे कदम आते हैं ॥
 रक्से-मै^२ तेज करो, साज की लै तेज करो ।
 सूए-मैखाना^३ सफीराने - सफर^४ आते है ॥
 कुछ हमी को नही अहसान उठाने का दिमाग ।
 वो तो जब आते हैं, मायल-ब-करम^५ आते हैं ॥
 और कुछ देर न गुजरे शबे-फुर्कत^६ से कहो ।
 दिल भी कम दुखता है वो याद भी कम आते हैं ॥
(जेल में)



१ मूर्तियां २ शराब का नृत्य (दौर) ३ मधुशाला की
 और ४ मुमाफिर ५ कृपा करने पर उतारू ६ वियोग की रात

अज्जे-अहले-सितम की^१ वात करो ।

इयक के दम-कदम की वात करो ॥

वज्जे-अहले-तरव को^२ जमाओ ।

वज्जे-असहावे-गम की^३ वात करो ॥

वामे-सरवत के^४ खुशनसीबों से ।

अज्जते-चदमे-नम की^५ वात करो ॥

हे वही वात यूं भी प्रीर यू भी ।

तुम सितम या करम की^६ वात करो ॥

सैर हैं अहले - दैर^७ जैसे हैं ।

आप अहले-हरम^८ की वात करो ॥

हिज्ज की शव तो कट ही जायेगी ।

रोजे-वस्ले-सनम की^९ वात करो ॥

जान जाएंगे जानने जाने ।

'फैज' फरहादो-जम की^{१०} वात करो ॥

(जेन में)



१. अन्धकारियों की गिटगिजाट २. प्रसोद मनाने वालों की मन्ना की
 ३. जम जिनरी निधि है लाली मन्ना की ४. ममूजि के गिगर पर के
 ५. मजल नेनों की गजानना की ६. हुना की ७. मन्दिर वाले
 ८. माये (की जगरीयारी) वालों की ९. प्रेमिता के मिनन के दिन की
 १०. जगद और जमोद (दिसान का एक प्रसिद्ध राजा) की

शंख साहब से रस्मो-राह न की ।
 शुक्र है जिन्दगी तबाह न की ॥
 तुम्ह को देखा तो सेर-चश्म हुए^१ ।
 तुम्ह को चाहा तो और चाह न की ॥
 तेरे दस्ते-सितम का^२ अज्ज^३ नही ।
 दिल ही काफिर था जिसने आह न की ॥
 थे शवे-हिज्र^४ काम और बहुत ।
 हमने फिक्रे-दिले-तबाह न की ॥
 कौन कातिल बचा है शहर मे 'फँज' ।
 जिससे यारो ने रस्मो-राह न की !

(जेल में)



१ आखो की सारी भूख मिट गई २ अत्याचारी हाथ का
 ३ नम्रता या कमी ४ वियोग की रात को

शामे-फिराक^१ अब न पूछ, घाँटे और आके टल गई ।

दिल था कि फिर बहल गया, जाँ थी कि फिर सभल गई ॥

बड़े-छयाल मे^२ तेरे हुस्न की शम्भय जल गई ।

दर्द का चांद बुझ गया, हिज्र की रात टल गई ॥

जब तुझे याद कर लिया, सुबह महक-महक उठी ।

जब तेरा गम जगा लिया, रात मचल-मचल गई ॥

दिन से तो हर मुआमला करके चने थे साफ हम ।

फहने में उनके सामने बात बदल-बदल गई ॥

आखिरे-शब के^३ हम-सफ़र 'फँज' न जाने क्या हुए ?

रह गईं किस जगह सबा^४, मुबह किधर निकल गई ?

(जेल में)

◊

◊

◊

१. विनोद की धान २. आलापों की नगा में ३. रात के
पल में ४. प्रभाव-शरीर

अब वही हर्फे-जुनू^१ सब को जबां ठहरी है ।
 जो भी चल निकली है, वो बात कहा ठहरी है ॥
 आज तक शैख के अकराम मे^२ जो शै थी हराम ।
 अब वही दुश्मने - दी^३ राहते-जा^४ ठहरी है ॥
 है खबर गर्म कि फिरता है गुरेजा^५ नासेह^६ ।
 गुप्तगू आज सरे - कूए - बुता^७ ठहरी है ॥
 वस्ल की शव थी तो किस दर्जा सुबक^८ गुजरी थी ।
 हिज्ज की शव है तो क्या सख्त गिरा^९ ठहरी है ॥
 इक दफा विखरी तो हाथ आई है कव मीजे-शमीम^{१०} ।
 दिल से निकली है तो क्या लव पे फुगा^{११} ठहरी है ॥
 दस्ते-सय्याद^{१२} भी आजिज^{१३} है, कफे-गुलची^{१४} भी ।
 बूए-गुल^{१५} ठहरी, न बुलबुल की जबा ठहरी है ॥
 आते आते युही दम भर को रुकी होगी वहार ।
 जाते जाते युही पल भर को खिजा ठहरी है ॥
 हमने जो तर्जे-फुगा^{१६} की है कफस में^{१७} ईजाद ।
 'फैज' गुलशन में वही तर्जे - बया^{१८} ठहरी है ॥
 (जेल में)

१ उन्माद की बात (भापा) २ पारितोषिक ३ धर्म की शत्रु
 ४ जीवन का आनन्द ५ विरक्त ६ उपदेशक ७ प्रेमिका की
 गली में ८ हल्की, शीघ्र ९ भारी, असह्य १० सुगंध की
 नहर ११ आह १२ शिकारी का हाथ १३ असमर्थ १४ माली
 का पजा १५ फूल की सुगंध १६ आर्त्तनाद का ढग १७ पिंजरे
 में १८ बात का ढग

राजे - उल्फत छुपा के देस लिया ।
 दिल बहुत कुछ जना के देस लिया ॥
 और क्या देवने को वाकी है ।
 आप से दिल लगा के देस लिया ॥
 आस उस दर से टूटती ही नहीं ।
 जाके देगा, न जाके देव लिया ॥
 वो मेरे होके भी मेरे न हुए ।
 उनको प्रपना बना के देव लिया ॥
 आज उनकी नज़र मे कुछ हमने ।
 सब की नज़रे बचा के देस लिया ॥
 'फ़ैज़' तकमीले-गम' भी हो न सकी ।
 इराक को आजमा के देस लिया ॥

◊

◊

◊

गुलो में रग भरे वादे-नौबहार^१ चले ।
 चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले ॥
 कफस^२ उदास है यारो सबा से^३ कुछ तो कहो ।
 कहीं तो वहरे-खुदा^४ आज जिक्रे-यार चले ॥
 बडा है दर्द का रिश्ता, ये दिल गरीब सही ।
 तुम्हारे नाम पे आएंगे गमगुसार^५ चले ॥
 जो हम पे गुजरी सो गुजरी मगर शबे-हिज्रां ।
 हमारे अश्क तेरी आकबत^६ सवार चले ॥
 हुजूरे - यार^७ हुई दफ्तरे - जुनू की^८ तलब ।
 गिरह में लेके गिरेबा का तार-तार चले ॥
 मुकाम 'फैज़' कोई राह में जचा ही नहीं ।
 जो क्लए-यार से^९ निकले तो सूए-दार^{१०} चले ॥
 (जेल में)



१ नव-वसन्त की हवा २ पिजरा ३ प्रभात-समीर ४ भगवान
 के लिए ५ सहानुभूति-कर्ता ६ वियोग की रात को ७ परलोक
 ८ यार की सेवा में ९ इश्क (उन्माद) के वृत्तात् १० यार की
 गली से ११ फामी के तख्ते की ओर

हिम्मते-इत्तिजा^१ नहीं वाकी ।

जव्त का होमला नहीं वाकी ॥

इक तेरी दीद^२ छिन गई मुक्त से ।

वर्ना दुनिया मे क्या नहीं वाकी ?

अपनी मश्के-सितम ने^३ हाथ न खैच ।

मै नहीं या वफा नहीं वाकी ॥

तेरी चश्मे-अलम-नवाज^४ की खैर ।

दिल मे कोई गिला नहीं वाकी ॥

हो चुका सत्तम अह्दे-हिज्रो-विमाल^५

जिन्दगी मे मजा नहीं वाकी ॥

◊

◊

◊

१. शायस की शक्ति २. दर्शन ३. परकवार के प्रत्याग मे
४. देखा गया अपने गारी शान्त ५. शिरोत तथा शिरत का जमात

कब याद में तेरा साथ नहीं, कब हाथ मे तेरा हाथ नहीं ।
सद^१ शुक्र कि अपनी रातो मे अब हिज़्ज की कोई रात नहीं ॥

मुश्किल हैं अगर हालात वहा, दिल बेच आयें जा दे आयें ।
दिल वालो कूचा-ए-जाना मे^२ क्या ऐसे भी हालात नहीं ॥

जिस घज से कोई मकतल में^३ गया, वो शान सलामत रहती है ।
ये जान तो आनी-जानी है, इस जा की तो कोई बात नहीं ॥

मैदाने-वफा^४ दरबार नहीं, या नामो-नसब की^५ पूछ कहा ?
आशिक तो किसी का नाम नहीं, कुछ इश्क किसी की ज्ञात नहीं ॥

गर बाज़ी इश्क की बाज़ी है, जो चाहो लगा दो डर कैसा ?
गर जीत गये तो क्या कहना, हारे भी तो बाज़ी मात नहीं ॥

(जेल में)



१ सौ २ प्रेमिका की गली मे ३. वधस्थल ४ वफा का क्षेत्र
५ नाम तथा कुल की

चग्मे-मैगूं^१ जरा इधर कर दे,
 दस्ते-कुद्रत को^२ वेअसर^३ कर दे ।
 तेज है प्राज ददें-दिल साकी,
 तल्ली-ए-मै^४ को तेजतर^५ कर दे ।
 जोगे-वहगत^६ है तिन्ना-जाम^७ अभी,
 चाक दामन को ताजगर^८ कर दे ।
 मेरी किस्मत से खेलने वाले,
 मुझको किस्मत में वेअवर कर दे ।
 लुट रही है मेरी मताअ-ए-नियाज^९,
 काग ! वो इस तरफ नजर कर दे ।
 'फंज' तकमीले-यारजू^{१०} मालूम ?
 हो सके तो यंही दस्तर कर दे ।

१. चग्मे ते रज जेगे रज बानी प्रांग २. प्रकृति के नाम को
 ३. निद्रनाय ४. दग्गल की कज्जाए ५. घोर पश्चिम तेज
 ६. जग्गाए एन जोग ७. फलूस ८. सफन-मजोरद ९. अति-अनी
 पूर्ण १०. यन्निजाना पूछें होने का परिणाम

रह-ए-खिजा^१ मे तलाशे-बहार करते रहे,
 शबे-सियह^२ से तलबे-हुस्ने-यार^३ करते रहे ।
 खयाले-यार कभी 'जिक्रे-यार करते रहे,
 इसी मताअ^४ पे हम रोज़गार करते रहे ।
 नही शिकायते - हिजा^५ कि इस वसीले से^६,
 हम उनसे रिश्ता-ए-दिल उस्तवार^७ करते रहे ।
 वो दिन कि कोई भी जब वजह-ए-इन्तज़ार न थी,
 हम उनमें तेरा सिवा^८ इन्तज़ार करते रहे ।
 हम अपने राज़ पे नाज़ा थे, शर्मसार न थे,
 हर-एक से सुखने-राज़दार^९ करते रहे ।
 उन्ही के फैज़^{१०} से बाज़ारे-अक्ल रीशान है,
 जो गाह-गाह^{११} जनु^{१२} अख्तियार करते रहे ।

१ पतझड़ के मार्ग मे २ काली, अधियारी रात ३ यार का सौन्दर्य मांगते रहे ४ सरमाया ५ वियोग की मुझे शिकायत नही है ६ साधन मे ७ हृद ८ और अधिक ९ गुप्त भेद बतलाते रहे १० कृपा ११ कभी-कभी १२ पागलपन

[नज़रे-गालिव]^१

किसी गुमा^२ पे तबकक^३ जियादा रखते हैं,
फिर गाज कू-ए-बुना का^४ डरादा रखते हैं ।
बहार आएगी जब आएगी, ये बात नही,
कि तिग्ना-काम^५ रहे गर्बे वादा^६ रखते है ।
तेरी नज़र का गिला क्या ? जो है गिला दिल को
तो हम ने है कि तमन्ना^७ जियादा रखते हैं ।
गमे-जहा^८ हो, गमे-यार हो^९, कि तीरे-सिनम^{१०},
जो आए-आए, कि हम दिन कुसादा^{११} रखते हैं ।
जवाब वाज्जे-चाबुक-कवा^{१२} में 'फँस' हमें,
यही बहुत है जो दो हफ़े-वादा रखते है ।



१ यह कविता मतालिब 'गालिव' की एक प्रकृत है जो एक कवि
गरी है, इनामि 'फँस' ने इसे गाविर को 'मिर्द' लिखा है । २. गुमा
३. तबकक ४. प्रियनी की रानी में जाने का ५. वृत्ति ६. डराव
७. अभिन्नाया ८. नागरिका विनाए ९. प्रियनी-मन्मन्दी लिखा
१०. तबकककक का रीर ११. मुक्त कृपा, लिखा १२. केर (मिर्द)
क्षेमने नामा इतरकक

[नज़रे-सौदा]^१

फिक्रे-दिलदारिये-गुलज़ार^२ करू या न करूं ?
 ज़िक्रे-मुर्गानि-गिरफ्तार^३ करू या न करूं ?
 किस्सा-ए-साज़िशे-अगियार^४ कहूँ या न कहूँ ?
 शिकवा-ए-यारे तरहदार^५ करूं या न करूँ ?
 जाने क्या वज़्र^६ है अब रस्मे-वफा^७ की ऐ दिल !
 वज़्र-ए-देरीना पे^८ इसरार^९ करू या न करूँ ?
 यूँ बहार आई है इमसाल^{१०} कि गुलशन में सबा^{११},
 पूछती है गुज़र^{१२} इस बार करूं या न करूँ ?
 गोया^{१३} इस सोच मे है दिल में लहू भरके गुलाब,
 दामनो-जेब को गुलनार^{१४} करू या न करूँ ?
 है फकत मुर्गे-गज़ल-ख्वा^{१५} कि जिसे फिक्र नहीं,
 मौअत-दिल^{१६} गर्मी-ए-गुफ्तार^{१७} करू या न करूँ ।



१ यह गज़ल उर्दू के विख्यात प्राचीन कवि 'सौदा' की एक ग़ज़ल के ढग पर लिखी गई है, इसलिए 'फेज' ने इसे 'सौदा' को भेंट किया है। २ देश-रूपी उद्यान की देख-भाल की चिन्ता ३ बन्दी पक्षियों की चर्चा ४ शत्रुओं के पड्यन्त्र की कहानी ५ रगीले यार की गिकायत ६ रीति ७ प्रेम निभाने की परिपाटी ८ प्राचीन प्रणाली ९ हठ १० इस साल ११ प्रात-समीर १२ प्रवेश १३ मानो १४ पुष्पित, रगीन १५ गाने वाला पक्षी १६ हल्की, नरम, सह्य १७ बात की गर्मी को

कुछ चुने हुए शेर

अदा-ए-हूस्न को^१ मासूमियत को कम कर दे,
गुनाहगार नजर को हिजाब^२ आता है ।

◊ ◊ ◊

बक्के-हिमनो-यास^३ रहता है,
दिल है आसर उदान रहता है ।
तुम तो राम देके भूल जाते हो,
मुझ को अहना का पान^४ रहता है ॥

◊ ◊ ◊

न जाने किस लिए उम्मीदवार बंटा है ।
शक ऐसी राह पे जो तेरी गद्गुजर^५ भी नहीं ॥

◊ ◊ ◊

१ गुनस्ता को बस को २ बधा ३ हिजाबों के पर्दा
४ निदाह ५ गुजरने का नहीं

सारी दुनिया से दूर हो जाये,
जो ज़रा तेरे पास हो बैठे ।
न गई तेरी बेरुखी न गई,
हम तेरी आरजू भी खो बैठे ।

◇ ◇ ◇

दिल रहीने - गमे - जहाँ^१ है आज,
हर नफस^२ तिश्ना-ए-फुगा^३ है आज ।
सख्त वीरा है महफिले - हस्ती^४,
ऐ गमे-दोस्त^५ । तू कहा है आज ?

◇ ◇ ◇

न पूछ जब से तेरा इन्तज़ार कितना है ?
कि जिन दिनों से मुझे तेरा इन्तज़ार नहीं ।
तेरा ही अक्स है उन अजनबी वहारो मे,
जो तेरे लव, तेरे वाजू, तेरा किनार^६ नहीं ।

◇ ◇ ◇

१ सासारिक ग़मो के यहाँ गिरवी २ श्वास ३ आह का तृपित
४ जीवन-भभा ५ मित्र (प्रेमिका) का ग़म, ६. गोद

तेरा जमाल^१ निगाहों में लेके उट्ठा हूँ,
 निखर गई है फिजा^२ तेरे परहन की सी^३।
 नसीम^४ तेरे षदिरतां से^५ होके आई है,
 मेरी सहर में^६ महक है तेरे बदन की सी ।

◊ ◊ ◊

कर रहा था ग़मे-जहाँ का^७ हिसाब,
 आज तुम याद बेहिसाब आये ।
 न गई तेरे गम की सरदारी,
 दिल में यूँ रोज़ इंकिलाब आये ।

◊ ◊ ◊

फिक्रे - नूदो - जिया^८ तो छूटेगी,
 मिनते - ईनो - आं^९ तो छूटेगी ।
 लैर, दोजय में मैं मिले न मिले,
 गैस साहब ने जा तो छूटेगी ।

◊ ◊ ◊

१. नौश्वं २. रातावणु ३. निवान की सी ४. नूतु नसीर
 ५. नयनागार ६. गुमा में ७. गतादिक गमी रा = राम और
 राति की चिन्ता ८. लल-लली गुनामद

शौख से बेहिरास^१ रहते हैं,
हमने तौबा अभी नहीं की है।
ज़िक्रे-दोज़ख^२, बयाने-हूरो-कुसूर^३,
बात गोया यही कही की है।

◇ ◇ ◇

जगह जगह पे थे नासेह तो क़बकू^४ दिलबर।
इन्हे पसद, उन्हें नापसद क्या करते ?

◇ ◇ ◇

मौत अपनी, न अमल अपना, न जीना अपना,
खो गया शोरिखे - गेती मे^५ क़रीना^६ अपना।
नाखुदा^७ दूर, हवा तेज़, करी^८ कामे-नहग^९,
वक्त है फ़ैक दे लहरो में सफीना^९ अपना।

◇ ◇ ◇

१ निदर २ दोज़ख की चर्चा ३. हूरो और महलो की चर्चा
४ गली-गली में ५. ससार के हगामो में ६. सलीका ७. माझी
८ निकट ९. मगर का मुंह ९ नाव

गम्मे-नज़र^१, खयाल के अंजुम^२, जिगर के दाग,
जितने चिराग हैं तेरी महफिल से आये हैं।
उठ कर तो आ गये हैं तेरी बज्म से मगर,
कुछ दिल ही जानता है कि किस दिल से आये हैं।



न आज नुत्फ^३ कर इतना कि कल गुज़र न सके,
वो रात जो कि तेरे गेमुओं की^४ रात नहीं।
ये आरजू भी बड़ी चीज है मगर हरदम,
विमाले-यार^५ फ़कत आरजू की वान नहीं।



वात बस में निकल चली है,
दिल की हालत संभल चली है।
अब छतू^६ हृद में दट नला है,
अब तबीयत बहल चली है।



१. नज़र की गम्माय २. गिगारे ३. दाग प्रेम ४. लगी थी
५. प्रेमिका पर शिक्का ६. उम्माद

सीखी यही मेरे दिले-काफिर ने बन्दगी ।
 रब्बे-करीम^१ है तो तेरी रहगुज़र मे है ॥
 माज़ी में जो मज़ा मेरी शामो-सहर में था ।
 अब वो फ़क़त तसव्वुरे-शामो-सहर में^२ है ॥
 क्या जाने किसको किससे है अब दाद की तलब ।
 वो गम जो मेरे दिल मे है तेरी नज़र मे है ॥

◇ ◇ ◇

फिर हरीफे - बहार^३ हो बैठे ।
 जाने किस किसको आज रो बैठे ॥
 थी, मगर इतनी रायगाँ^४ न थी ।
 आज कुछ ज़िन्दगी से खो बैठे ॥
 सारी दुनिया से दूर हो जाये ।
 जो ज़रा तेरे पास हो बैठे ॥

◇ ◇ ◇

रात यूँ दिल मे तेरी खोई हुई याद आई,
 जैसे वीराने मे चुपके-से बहार आ जाये ।
 जैसे सहाराओ मे^५ हौले से चले वादे-नसीम^६ ,
 जैसे वीमार को वेवजह करार आजाये ।

◇ ◇ ◇

१ कृपालु भगवान २ शाम और सुबह की कल्पना मे ३ वसत
 के शत्रु ४ व्ययं " मरुस्थलो मे ६ मृदु समीर

मताग्र-ए-लीहो-कलम^१ छित गई तो क्या गम है ?
 कि खूने-दिल^२ में डबो ली हैं उगलिया मेंने ।
 जुवा पे मोहर लगी है तो क्या, कि रख दी है,
 हर एक हल्ला-ए-जंजीर^३ में जुवा मेंने ॥

◊ ◊ ◊

नुवह फूटी तो आस्मा पे तेरे,
 रंगै-रुस्तार को^४ फ़ुहार गिरी ।
 रात छाई तो रु-ए-आलम^५ पर,
 तेरी जुल्फो को आवशार^६ गिरी ।

१. मकम और लखी की पूंजी २. हृदय-रक्त ३. जंजीर की
 ब्रह्मण्डली में ४. शरीरों के रक्त की ५. जगत के कुल पर ६. विभंग

